❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 41, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 23 अक्तूबर, 2017 से रविवार 29 अक्तूबर, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा : 6-7-8 अक्तूबर, 2017

बर्मा में आर्यसमाज स्थापना के 120 वर्ष बाद प्रथम विशाल आर्य महासम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

भारत, नेपाल, अमेरिका, न्यूजीलैंड, लंदन, कनाड़ा, सिंगापुर, थाईलैंड की रही उपस्थिति

बर्मा के लगभग 35 आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने हजारों की संख्या में की भागीदारी

सम्मेलन से महात्मा बुद्ध की भूमि पर गूंजी वेदों की हुंकार

यज्ञ, योग और स्वाध्याय को लेकर कार्य करेगा म्यांमा में आर्यसमाज – अशोक खेत्रपाल, प्रधान, म्यांमा सभा

म्यांमा में आर्यसमाज के विस्तार की अपार सम्भावनाएं – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

महाशय धर्मपाल जी ने दिया विद्वानों के प्रशिक्षण हेतु गुरुकुल आरम्भ करने में भरपूर सहयोग का आश्वासन

म्यांमा की संस्कृति से बहुत कुछ सीखने की जरुरत : आने पर मन प्रफुल्लित – स्वामी सुमेधानन्द

रखाइन प्रान्त की घटना पर आर्यसमाज द्वारा शोक व्यक्त : आर्यसमाज ने किया देश की सुरक्षा, अखण्डता व शान्ति हेतु उठाए गए म्यांमा सरकार के हर कदम का समर्थन

ब्रह्म देश कालान्तर में बर्मा और वर्तमान में म्यांमार के नाम से जाना जाता है। यहां आर्य समाज की स्थापना वर्ष1903 में हुई थी। आर्यों का पुरुषार्थ वैदिक धर्म प्रचार की लगन और संस्कृति के प्रति समर्पण ने यह इतिहास रचा था। बाद में भारत से समय-समय पर विद्वान और संन्यासीगण वहां जाकर प्रचार-प्रसार करते रहे। किन्तु विगत 25-30 वर्षों से एक सूनापन आ गया प्रचार-प्रसार में शिथिलता आई, किन्तु वैदिक विचारधारा की अग्नि बनी रही। अनेक आर्य विचारधारा के व्यक्तियों के मन में अपने वैदिक धर्म के प्रति अटूट

आर्य साहित्य के प्रति गहरी रूचि रही आर्यजनों में

श्रद्धा तो थी किन्तु मार्गदर्शन और साधनों के अभाव में वे अपने कार्य को गति नहीं दे पा रहे थे।

दिल्ली में सन् 2006 में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में यह निर्णय लिया गया था कि भारत के बाहर पाँच आर्य महा सम्मेलन अन्य देशों में आयोजित किए जावें, उसी श्रृंखला में 11वाँ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को सम्पन्न हुआ। एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् म्यांमार में आर्य

प्रत्येक आर्यसमाज में लगेंगे यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

– शेष समाचार एवं चित्रमय झांकी 4-5-6-8 पर

वेद-स्वाध्याय

देवों और असुरों का संसार

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे।। -ऋ॰ 1/89/2
ऋषिः **गोतमो राहूगणपुत्रः।।** देवता **विश्वेदेवाः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - ऋजूयतां देवानाम् = ऋजुगामी या ऋजु लोगों को चाहने वाले देवों की **भद्रा सुमतिः** = कल्याणी सुमति **नः**= हम पर बनी रहे **देवाना रातिः**= ऐसे देवों का दान **नः**= हम पर **अभि निवर्तताम्**= सब ओर से निरन्तर बरसता रहे। **वयं देवानाम्** = हम इन देवों की **सख्यं उपसेदिम**= मैत्री प्राप्त करें, इनकी सख्यता-समानता में बैठें **देवाः**=ये देव **जीवसे**=जीवित जीवन के लिए **नः आयुः**= हमारी आयु को **प्रतिरन्तु**=बढ़ावें।

विनय- संसार दो प्रकार का कहा जा सकता है-एक देवों का संसार, दूसरा असुरों का संसार। देवों की मुख्य पहचान यह है कि ये ऋजुगामी होते हैं। इनका गमन, इनका व्यवहार सरल, सीधा और सच्चा होता है। इसके विपरीत असुर वे लोग होते हैं जिनका व्यवहार कुटिल, टेढ़ा और असत्यमय होता है। हमें ऋजुता प्रिय है, अतः हम देवों के संसार में रहना चाहते हैं। अपने चारों ओर, ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर, हमें देव-ही-देव दिखाई देते हैं। अपने सत्य नियमों के अनुसार चलने वाले, अपने सत्य-धर्मों से कभी न डिगनेवाले ये सूर्य, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल आदि बाहर के देव हैं, सत्यनिष्ठ, सत्यज्ञानी मनुष्य भी देव हैं, अन्दर प्राण-मन -बुद्धि-इन्द्रियां, सब देव हैं। चूंकि हमें ऋजुता प्रिय है, अतः इन देवों के बीच में रहने वाले हम चाहते हैं कि ऋजुता चाहेवाले इन देवों की कल्याणी मति हम पर सदा रहे-इनसे हमें सदा सच्ची ज्ञानप्रेरणा मिलती रहे। ये देव जो हमें सदा रक्षा, शान्ति, तेज, स्वास्थ्य, शक्ति, अन्न, पान, नाना प्रकार के सुखों का दान कर रहे हैं, ये शुभ दान हमें ऋजुगामियो पर सदा बरसते रहें। हमारा इन देवों से सख्य-सम्बन्ध स्थापित हो जाए, हम इन देवों के साथी हो जाएं। बल्कि अपने अन्दर देवों को बसाकर, पूरे ऋजु होकर हम ही देव बन जाएं और जब हमारे अन्दर देव बस जाएंगे, हमारे सब कार्य ठीक-ठीक सत्य नियमों से हुआ करेंगे तो इन देवों के द्वारा हम अपनी पूर्ण आयु तक जीवन को भी प्राप्त करेंगे और यह जीवन सच्चा जीवन होगा।

आओ, हम सब इस भूमि पर रहते हुए ही देवों के संसार के वासी हो जाएं, दिव्य-सुमति और दिव्य-दान पाते हुए देव बनकर देवों की भांति परिपूर्ण आयु-भर इस भूमि पर बसें।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दीपावली पर कानून का पटाखा

... देश में बहुसंख्यक समुदाय के पारम्परिक उत्सवों, त्यौहारों पर उनके मनाने के ढंग पर रोक लगाना/हटाना वोट की राजनीति का हिस्सा सा बन गया है। राजनेता इसे बखूबी अंजाम भी देते हैं। अब लोग सवाल खड़े कर पूछ रहे हैं क्या नववर्ष पर पटाखा जलाने से प्रदूषण नहीं होता? दीपावली पर पटाखा बिक्री पर लगी रोक से किसी को शायद ही दुःख हो स्वास्थ के लिहाज से इसे सब अच्छा कदम बता रहे लेकिन सवाल सबका यह कि क्या यह अन्य मतों के धार्मिक उत्सवों और परम्पराओं के तौर तरीकों पर भी कानून रोक लगा सकता है?....

धर्म, आस्था और भावना का ही एक मौलिक रूप है, जिसमें परम्पराएँ, पूजा, उपासना निहित होती हैं जोकि उत्सव, त्यौहार आदि के मनाने के तरीकों से लेकर पारम्परिक विधि ही धर्म का आंतरिक और बाहरी स्वरूप सामने रखती है। हमेशा से पूजा उपासना करने की विधि और उत्सवों से जुड़ी परम्परा ही धर्मो को विभाजित करती है, वरना कौन नहीं जानता कि ईश्वर एक है। जन्म से मृत्यु तक हर किसी के अपने जीवन जीने के तौर-तरीके और कर्म-कांड होते हैं। जिन तौर तरीकों को अधिकांश लोग एकमत होकर बिना विरोध के स्वीकार कर लें उसे पारम्परिक परम्परा का नाम दे दिया जाता है। हाल ही में देश के सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली-एनसीआर में दिवाली के अवसर पर पटाखों के कारण होने वाले प्रदूषण को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने 1 नवंबर तक के लिए दिल्ली सहित पूरे एनसीआर में पटाखों की बिक्री पर रोक लगा दी है। मतलब पिछले वर्ष 11 नवंबर 2016 का बिक्री पर रोक का आदेश फिर से बरकरार रहेगा।

समाज हित में लिये जाने वाले फैसले अक्सर कई बार विवादित बन जाते हैं क्योंकि लोग उन्हें अपनी आस्था और परम्पराओं पर चोट के रूप में देखते हैं। कई फैसले अन्य मत-मतान्तरों में तुलना की दृष्टि से विवादित भी माने जाते रहे हैं। पिछले दिनों दक्षिण भारत के एक पारम्परिक त्यौहार जलीकट्टू पर विरोध के सिलसिले में दक्षिण भारत उबल पड़ा था। उस समय भी सवालों से सुप्रीम के फैसले को दो-चार होना पड़ा था। हमने पहले भी लिखा था कि अक्सर हमारे देश में बहुतेरे फैसले जनभावनाओं को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। लेकिन पिछले कुछ समय में सबने देखा कि ज्यादतर फैसलों में सुप्रीम कोर्ट को विरोध का सामना ही करना पड़ा है। चाहे उसमें जन्माष्ठमी की दही हांड़ी प्रतियोगिता हो या महाराष्ट्र, कर्नाटक, पंजाब, हरियाणा, केरल व गुजरात में परंपरागत बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता।

दरअसल देश में बहुसंख्यक समुदाय के पारम्परिक उत्सवों, त्यौहारों पर उनके मनाने के ढंग पर रोक लगाना/हटाना वोट की राजनीति का हिस्सा सा बन गया है। राजनेता इसे बखूबी अंजाम भी देते हैं। अब लोग सवाल खड़े कर पूछ रहे हैं क्या नववर्ष पर पटाखा जलाने से प्रदूषण नहीं होता? दीपावली पर पटाखा बिक्री पर लगी रोक से किसी को शायद ही दुःख हो स्वास्थ के लिहाज से इसे सब अच्छा कदम बता रहे लेकिन सवाल सबका यह कि क्या यह अन्य मतों के धार्मिक उत्सवों और परम्पराओं के तौर तरीकों पर भी कानून रोक लगा सकता है?

पेटा जैसी संस्था का जलीकट्टू पर पशुओं के प्रति दया दिखाना लेकिन बकरीद पर लाखों पशुओं की कुर्बानी और क्रिसमस पर टर्की नामक पक्षी को भूनकर खाने पर मौन हो जाना, बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता पर रोक लगवाना लेकिन रेसकोर्स की घुड़दौड़ की अनदेखी करना, कोर्ट का जन्मअष्टमी पर दही हांड़ी को लेकर किशोरों का दर्द महसूस करना लेकिन मोहरम पर खामोश हो जाना बस यहीं सवाल खड़े हो जाते हैं कि देश एक है तो कानून एक क्यों नहीं है? इसे आप कुछ पल को अपनी धार्मिक भावनाओं की कसौटी पर रखकर सोचिये, क्या ऐसा नहीं लगता कि यह बहुसंख्यक समुदाय की आस्था पर चोट हो रही है? समय से साथ न जाने कितने परिवार पटाखों को लेकर स्वास्थ और सुरक्षा की दृष्टि से नकार चुके हैं। वे बच्चों को जाग्रत करते हैं कि पटाखा इस त्यौहार की परम्परा का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं है तो सरकार को भी आस्था को कानून में बांधने के बजाय जागरूक करने के कार्यक्रम चलाने चाहिए और एक वर्ग ही क्यों, हर किसी पंथ समुदाय से बुरे प्रभाव डालने वाली परम्परा हटाई जानी चाहिये?

असल में दिवाली पर पटाखा जलाना हमारी कोई प्राचीन संस्कृति का हिस्सा नहीं की शुद्धि होती थी, दीपक से रात्रि में प्रकाश होता था और आज के समय में दीपावली पर प्रदूषण बढ़ जाता है।

पिछली दिवाली के दौरान भी वायु प्रदूषण में बढ़ोत्तरी हुई थी हालाँकि पटाखों के अलावा अन्य कई कारणों थे जिसमें बड़े पैमाने पर पटाखों का प्रयोग के साथ हरियाणा पंजाब में पुराली जलाना भी शामिल था। इस कारण इस बार सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा है कि दिवाली के बाद इस बात की भी जांच की जाएगी कि पटाखों पर बैन के बाद हवा की स्थिति में कुछ सुधार हुआ है या नहीं, दरअसल सर्वोच्च अदालत इस फैसले को एक प्रयोग भांति भी ले रही है क्योंकि अदालत ने कहा कि एक बार हम ये टेस्ट करना चाहते हैं कि पटाखों पर बैन के बाद क्या हालात होंगे?

देश के अन्य बड़े शहरों की तरह ही राजधानी दिल्ली में लोगों की आंखों में जलन और सांस लेने में समस्या की शिकायत व्यापक रूप में अक्सर सामने आ जाती है। आंकड़े बताते हैं विश्वभर में 30 लाख मौतें, घर और बाहर के वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष होती हैं, इनमें से सबसे ज्यादा भारत में होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत की राजधानी दिल्ली, विश्व के 10 सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में से एक है। सर्वेक्षण बताते हैं कि वायु प्रदूषण से देश में, प्रतिवर्ष होने वाली मौतों के औसत से, दिल्ली में 12 प्रतिशत अधिक मृत्यु होती है। दिल्ली ने वायु प्रदूषण के मामले में चीन की राजधानी बीजिंग को काफी पीछे छोड़ दिया है। लेकिन इसके बावजूद भी सामाजिक दायित्व के निर्वहन के प्रति हमारा समाज पूर्णतः उदासीन ही नहीं बल्कि असंवेदनशील भी है। इसमें हमारी राजनीतिक मंशा भी मददगार होती है। हर रोज की बरती जा रही लापरवाही को लेकर हम कब सजग होंगे यह भी हमारे ऊपर ही निर्भर करता है या फिर हर काम में कानून ही दखल देगा?

- ***सम्पादकीय***

सबरीमाला मन्दिर ! क्या रोक जरुरी है?

...देश की स्वतंत्रता के इन सात दशकों में महिलाओं के हालात कितने बदले? वे धार्मिक रूप से कितनी स्वतंत्र हो पाई हैं? कथित धार्मिक, सामाजिक जंजीरों से बंधी उस महिला को क्या पूजा उपासना की भी इजाजत नहीं मिलेगी, उनकी धार्मिक इच्छाओं का कोई मोल नहीं है? भले ही आज अपने अधिकारों को लेकर वे समाज को चुनौतियां दे रही हों लेकिन शनि शिगणापुर और हाजी अली दरगाह के बाद यह घटना चौकाने वाली है। यह भेदभाव देश में कई जगह आज भी मौजूद हैं। बिहार के नालंदा का माँ आशापुरी मंदिर भी इसी कतार में खड़ा है। जहाँ 21वीं सदी के इस भारत में आज भी नवरात्रि में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। ....

केरल के सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को जाने से न धर्म रोकता सकता है न संविधान यदि उसे कोई रोक रहा है तो केवल एक सोच और परम्परा जो सदियों पहले कुछ तथाकथित धर्मगुरुओं द्वारा स्थापित की गयी थी। महाराष्ट्र में शनि शिगणापुर मंदिर और मुंबई में हाजी अली दरगाह में महिलाएं प्रवेश की जद्दोजहद लगी थीं। अब केरल के सबरीमाला मंदिर में जाने की इजाजत मांग रही हैं। एक तरफ देश की बेटियां जहाँ आज ओलम्पिक से पदक लेकर लौट रही हो, विदेशों में राजदूत बनकर, रक्षा मंत्री से विदेश मंत्रालय तक का पद सम्हालते हुए देश का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ देश की सेना में शामिल हो, जल थल और अंतरिक्ष तक में देश की रक्षा के लिए खड़ी हैं लेकिन दूसरी तरफ उसे उसके धार्मिक अधिकारों से वंचित रखा जाता हो तो एक देश समाज के लिए यह शर्मनाक बन जाता है।

सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश पर रोक से संबंधित मामला हाल ही में अपनी संविधान पीठ को भेज दिया है। जिसकी सुनवाई प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ करेगी। दरअसल सबरीमाला मंदिर में परंपरा के अनुसार, 10 से 50 साल की महिलाओं की प्रवेश पर प्रतिबंध है। मंदिर प्रबंधन की मानें तो यहां 1500 साल से महिलाओं का प्रवेश प्रतिबन्धित है। इसके कुछ धार्मिक कारण बताए जाते रहे हैं। जैसे पिछले दिनों मंदिर प्रबंधन ने सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि 10 से 50 वर्ष की आयु तक की महिलाओं के प्रवेश पर इसलिए प्रतिबंध लगाया गया है क्योंकि मासिक धर्म के समय वे ''शुद्धता'' बनाए नहीं रख सकतीं। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है और मंदिर प्रबंधन इसे बनाये रखना चाहता है।

हालाँकि सर्वोच्च अदालत ने इससे पहले सबरीमाला मंदिर में महिलाओं का प्रवेश को वर्जित करने संबंधी परंपरा पर सवाल उठाते हुये कहा था कि वह इस बात की जांच करेगा कि क्या 'आस्था और विश्वास' के आधार पर लोगों में अंतर किया जा सकता है? और सवाल उठाते हुए पूछा है कि क्या यह परम्परा महिलाओं के साथ लैंगिक भेदभाव नहीं है?, क्या यह धार्मिक मान्यताओं का अटूट हिस्सा है जो टूट नहीं सकता? और क्या ये परम्परा संविधान के अनुच्छेद 25 यानी धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार का हनन नहीं है?

देश की स्वतंत्रता के इन सात दशकों में महिलाओं के हालात कितने बदले? वे धार्मिक रूप से कितनी स्वतंत्र हो पाई हैं? कथित धार्मिक, सामाजिक जंजीरों से बंधी उस महिला को क्या पूजा उपासना की भी इजाजत नहीं मिलेगी, उनकी धार्मिक इच्छाओं का कोई मोल नहीं है? भले ही आज अपने अधिकारों को लेकर वे समाज को चुनौतियां दे रही हों लेकिन शनि शिगणापुर और हाजी अली दरगाह के बाद यह घटना चौकाने वाली है। यह भेदभाव देश में कई जगह आज भी मौजूद हैं। बिहार के नालंदा का माँ आशापुरी मंदिर भी इसी कतार में खड़ा है। जहाँ 21वीं सदी के इस भारत में आज भी नवरात्रि में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। उनकी कथित परम्परा के अनुसार वहां 9 दिनों तक महिलाएं प्रवेश नहीं पा सकतीं। उनका मानना है कि महिलाएं तंत्र सिद्धि में बाधक होती हैं।

नवरात्रि में मां, महिला और कन्याओं की पूजा करने वाले देश के सामने इन कथित धर्मगुरुओं का यह धार्मिक एकाधिकार का सवाल भी मुंह खोले खड़ा है। मध्यप्रदेश के दतिया की पीतांबरा पीठ भले ही इस पीठ के ट्रस्ट की प्रमुख राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया हैं, लेकिन यह मंदिर भी सुहागिनों के लिए प्रतिबंधित है। ऐसा कहा जाता है कि मां धूमावती विधवाओं की देवी हैं। यदि थोड़ा आगे बढ़ें तो तमिलनाडू के मदुरे के येजहायकथा अम्मान मंदिर में तो परम्परा के नाम पर और भी शर्मनाक कार्य होता है यहाँ सात या उससे अधिक छोटी लड़कियों को देवी की तरह सजाकर उनके ऊपरी वस्त्र उतारकर पन्द्रह दिनों तक पूजा की जाती है। हालाँकि इस बार प्रशासन की सख्ती के कारण पुरे वस्त्र पहनाये गये थे।

रोजाना की जिंदगी के छोटे-छोटे निर्णयों में भी धर्म और परम्पराओं के नाम पर महिलाओं को नियंत्रित किया जा रहा है, क्या ऐसे में एक महिला इस भेदभाव को महसूस नहीं करती होगी? एक तरफ आर्य समाज महिलाओं की शिक्षा, स्वतंत्रता, समानता और उनके बुनियादी अधिकारों को लेकर खड़ा है तो दूसरी ओर महिलाओं को दोयम दर्जे की वस्तु मानने वाले कथित धार्मिक, सामाजिक विधि-विधान, प्रथा-परम्पराएं, रीति-रिवाज और अंधविश्वास जोर-शोर से थोपे जा रहे हैं और बेशर्मी देखिये कि इन कृत्यों को यह लोग सनातन परम्परा का अंग बताने से नहीं हिचकते।

क्या यह लोग बता सकते हैं कि देश में नारियों पर बंदिशें धर्म ने थोपीं या समाज के ठेकेदारों ने? यदि धर्म ने थोपी तो वैदिक काल का एक उदहारण सामने प्रस्तुत करें, शिक्षा और स्वतंत्रता से लेकर वर चुनने का अधिकार देने वाले सनातन वैदिक धर्म के नाम पर आचारसंहिता लागू कर फतवे जारी करने वाले लोग आज इसे धर्म से जोड़ रहे हैं। अपनी स्वरचित परम्परा लेकर उसके आत्म विश्वास पर हमला कर रहे हैं।

कन्या जब पैदा होती है, तो कुदरती लक्षणों को अपने अंदर लेकर आती है। यह उसका प्राकृतिक हक है। फिर एक प्राकृतिक व वैज्ञानिक प्रक्रिया से जोड़कर उसे अपवित्र बताने वाले क्या ईश्वर के बनाये विधान का अपमान नहीं कर रहे हैं? पुरुष की तरह ही ईश्वर ने उसे भी मनुष्य बनाया है यानि पुरुष का विपरीत लिंगी। ईश्वर ने कोई भेदभाव उसके साथ नहीं किया, विज्ञान से उसे मनुष्य जाति में पुरुष के मुकाबले ज्यादा महत्वपूर्ण माना, वेद ने उसे लक्ष्मी और देवी की संज्ञा देते हुए नारी को समाज निर्माण का प्रमुख अंग बताया पर इन कथित धर्म के ठेकेदारों की यह सोच आज भी गहराई तक जड़ें जमाए है कि वह अपवित्र है। यदि स्त्री अपवित्र है तो क्या एक माँ, बहन और पत्नी भी अपवित्र है?

-राजीव चौधरी

बोध कथा

इन्द्रियों को वश में रखने की विधि

स्वामी रामतीर्थ जब प्रोफेसर थे, तब लाहौर के एक कॉलेज में पढ़ाते थे। वह रहते थे लुहारी दरवाज़ा में। कॉलेज से घर को आ रहे थे, तो लुहारी दरवाजे में उन्होंने एक व्यक्ति को टोकरी में रखकर नींबू बेचते हुए देखा। पीले रंग के रसभरे नींबू थे। मुख में पानी आ गया। जिह्वा ने कहा-''क्रय कर लो, उनका स्वाद बहुत उत्तम है।''

तीर्थराम थोड़ी देर रुके। फिर आगे बढ़ गये। आगे जाकर जिह्वा फिर मचली; उसने कहा-''नींबू अच्छे तो थे, नींबू खाने में हानि क्या है?''

तीर्थराम उल्टे आये। नींबूओं को देखा। वास्तव में बहुत उत्तम थे। उन्हें देखकर फिर घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर गये तो जिह्वा फिर चिल्ला उठी-''नींबू का रस तो बहुत अच्छा है। नींबू तो खाने की चीज़ है। उसे खाने में पाप क्या है?''

तीर्थ राम पुनः नींबू वाले के पास आ गये। दो नींबू मोल ले लिये। घर पहुंचे। देवी से कहा-''चाकू लाओ।'' उसने चाकू लाकर रख दिया। तीर्थराम चाकू का नींबू के पास और दोनों को अपने समक्ष रखकर बैठ गये। बैठे रहे, देखते रहे। अन्दर से आवाज़ आई-''इन्हें काटो, काटने में क्या हानि है?''

रामतीर्थ ने चाकू उठाया और एक नींबू को काट दिया। मुख में पानी भर आया। अन्दर से फिर प्रेरणा हुई-''इसे चखकर तो देखो, इसका रस बहुत उत्तम है।''

रामतीर्थ ने एक टुकड़े को उठा लिया, जिह्वा के समीप ले गये। नींबू को उसके साथ लगने नहीं दिया। अन्दर से किसी ने पुकारकर कहा-''तू क्या इस जिह्वा का दास है? जो यह जिह्वा कहेगी, वहीं करेगा? जिह्वा तेरी है, तू जिह्वा का नहीं।''

समीप खड़ी पत्नी ने कहा-''यह क्या करते हो? नींबू को लाये इसे काटा, अब खाते क्यों नहीं?''

जिह्वा ने कहा-''शीघ्रता करो। नींबू का स्वाद बहुत उत्तम है।''

रामतीर्थ शीघ्रता से उठे। कटे और बिना कटे हुए दोनों नींबुओं को उठाकर गली में फेंक दिया और प्रसन्नता से नाच बैठे-''मैं जीत गया!''

यह है इन्द्रियों को वश में करने की विधि!

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रेरक प्रसंग

वे ऐसे धर्मानुरागी थे

स्यालकोट के लाला गणेशदास जी जब स्वाधीनता संग्राम में कारावास गये तो उन्हें बन्दी के रूप में खाने के लिए जो सरसों का तेल मिलता था, उसे जेल के लोहे के बर्तनों में डालकर रात को दीपक बनाकर अपनी काल कोठरी में स्वाध्याय किया करते। 'आर्याभिविनय' ऋषिकृत पुस्तक का सुन्दर उर्दू अनुवाद पाद टिप्पणियों सहित इसी दीपक के प्रकाश में जेल में तैयार हुआ। इसे 'स्वराज्य पथ प्रदर्शक' के नाम से बड़े सुन्दर कागज पर आपने छपवाया था। जिन्होंने काल कोठरी में भी स्वाध्याय, सत्संग, शोध, साहित्य-सृजन को अपना परम धर्म जाना, ऐसे धर्मवीरों का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा (बर्मा): 6-7-8 अक्तूबर, 2017

सम्मेलन के अवसर पर आयोजित विभिन्न सत्रों में म्यांमा की जनता को मिला वैदिक विद्वानों का उद्‌बोधन एवं संन्यासियों का अशीर्वाद

म्यांमा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने लिया एकरूप सामूहिक यज्ञ प्रशिक्षण

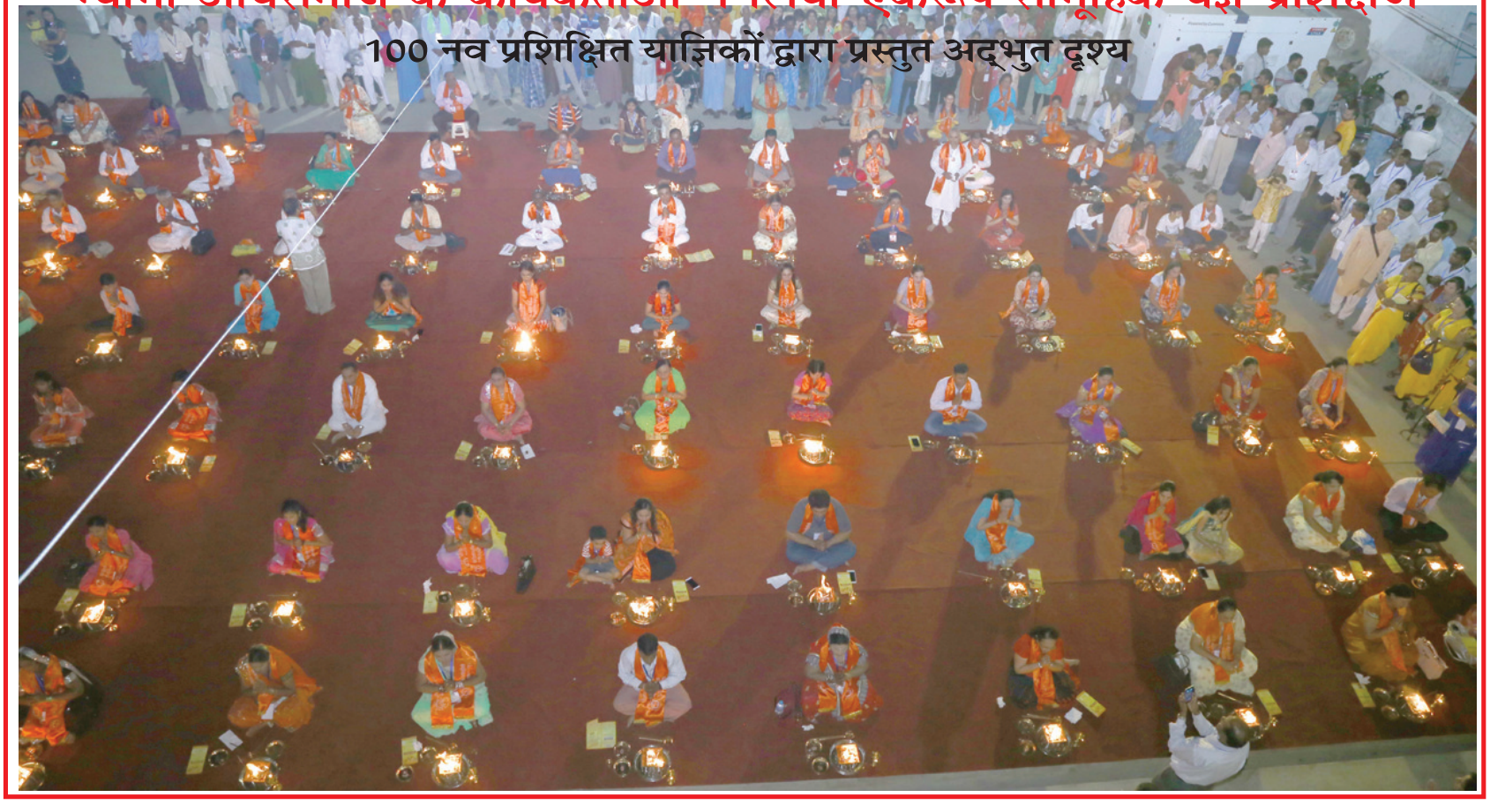

100 नव प्रशिक्षित याज्ञिकों द्वारा प्रस्तुत अद्‌भुत दृश्य

महासम्मेलन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान

म्यांमा के विभिन्न आर्य आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं की संस्कृतिक प्रस्तुति एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान

सम्मेलन के तीनों दिन प्रातःकाल स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती जी के निर्देशन में आयोजित हुआ योग प्रशिक्षण

प्रथम पृष्ठ का शेष

समाज की स्थापना के एक शताब्दी पश्चात् इस महासम्मेलन का आयोजन माण्डले में किया गया।

सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के साथ मैं व श्री विनय आर्य माण्डले विगत 1 वर्ष पूर्व गए। वहां जाकर इसे

महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपौत्र श्री पूनम सूरी जी ने भेजी सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता के लिए शुभकामनाएं। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पढ़कर सुनाया सन्देश।

करने की चर्चा की। इस हेतु रंगून से माण्डले के मध्य स्थापित अनेक आर्य समाजों में जाकर जन सम्पर्क कर सम्मेलन की जानकारी दी गई। संगठन की इस चर्चा ने आर्यों में एक उत्साह और नई आशा की किरण दिखाई दी। रंगून और माण्डले में म्यांमार देश के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक में इस सम्मेलन को मनाने पर अनेक प्रकार की शंकाएं और असमर्थता की भावनाएं सामने आई। अनुभव और साधनों के अभाव से घिरे आर्य निर्णय नहीं ले पा रहे थे। किन्तु सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के द्वारा तन मन धन से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इसके पश्चात निरन्तर सम्पर्क और बर्मा आने जाने का क्रम बना, सभा प्रधानजी से विचार विमर्श पश्चात् फिर मैं व विनय आर्य ने 3 बार आकर आगामी रूपरेखा व अन्य तैयारियों में सहयोगी बन उत्साहवर्धन करते रहे।

अन्त में वह घड़ी आ गई जिसका

संगठन में उर्जा संचार के लिए हर वर्ष क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन होगा म्यांमा के विभिन्न शहरों में : प्रस्ताव हुआ पारित

हजारों बर्मा निवासी इन्तजार कर रहे थे।

भारत से लगभग 160 तथा मॉरिशस, अमेरिका, न्यूजीलैण्ड, कैनेड़ा, नेपाल, आदि स्थानों से लगभग 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम माण्डले शहर के महत्वपूर्ण आबादी वाले तथा नगर के प्रसिद्ध स्थान अम्बिका मन्दिर में आयोजित किया गया था। अत्यन्त सुविधाजनक मन्दिर के मैदान में सुन्दर साज सज्जा के साथ भव्य यज्ञ शाला, पण्डाल और

महिलाओं एवं बच्चों द्वारा प्रस्तुत संगीत का कार्यक्रम अद्वितीय

आकर्षक मंच का निर्माण स्वत: ही सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। जो भी देखता वह सराहना किए बिना नहीं रहता। साहित्य विक्रय तथा अन्य सामग्री विक्रय स्टॉल भी बनी थी। इस प्रकार का आयोजन बर्मा के लिए शायद पहला ही आयोजन था।

म्यांमा सभा के प्रधान श्री अशोक क्षेत्रपाल जी अपने उद्बोधन में कहा, ''म्यांमा के गांव-गांव में वर्षो से आर्य समाज की जड़ें जमी हुई हैं। आज के इस सम्मेलन में आश्वासन देता हूं कि आर्य समाज म्यांमा देश के विभिन्न शहरों में हर वर्ष क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित करेगा साथ ही आर्य वीर दल/युवा दल का संगठन भी तैयार करेगा जिससे म्यांमा के आर्य समाज में युवाओं की जबरदस्त भागीदारी स्थापित हो।'' श्री अशोक क्षेत्रपाल और उनकी पूरी टीम जिसमें महिलाएं, नवयुवक, बालक-बालिकाएं सभी पूरी निष्ठा और पूर्ण शक्ति से लगे थे। यह एक विशेषता यहां सबने देखी जो प्रेरणास्पद थी।

म्यांमा सभा के अनुमान से दोगुने प्रतिनिधियों ने कार्यक्रम के पूर्व अपना पंजीयन करा लिया था। सम्मेलन में विद्वान, सन्यासी, गायक, वक्ता, बड़ी संख्या में पधारे थे।जिसमें प्रमुख रूप से स्वामी

भारत व म्यांमा का आर्यसमाज आयोजित करेंगे युवा विनियम Youth Exchange के कार्यक्रम

धर्मानन्दजी (आमसेना), स्वामी देवव्रतजी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी राजेन्द्रजी, आचार्य ज्ञानेश्वरजी, डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, आचार्या नन्दिताजी शास्त्री, डॉ. रामकृष्णजी शास्त्री, आचार्य सनत कुमार, आचार्य आनन्द प्रकाश, डॉ. सत्यकाम शर्मा, प्रो. ओमकुमार जी आर्य, आदि के द्वारा सम्मेलन को सम्बोधित किया गया।

इसके अतिरिक्त कैनेड़ा के श्री हरीश वाष्णेय, श्रीमती मधू वाष्णेय, श्री दीनदयालजी गुप्त, श्री धर्मपाल आर्य, श्री वाचोनिधी आर्य, श्री हंसमुख भाई परमार भी उपस्थित रहे।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में माण्डले के मुख्यमन्त्री और मन्त्री मण्डल के अनेक विभागों के मन्त्री, भारत के राजदूत, मेयर, नेता तथा आर. एस. एस., सनातन धर्म सेवक संघ, हिन्दू संगठन के अनेक नेता

महासम्मेलन में आर्य युवाओं की जबरदस्त भागीदारी : आर्यसमाज के भविष्य उज्ज्वल का संकेत

उपस्थित हुए। स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा दिये गये अपने उद्बोधन में कहा ''देश की सुरक्षा, अखण्डता व शान्ति के लिए उठाए जा रहे म्यांमा व भारत सरकार के हर कदम

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा - 2017
समारोह तीनों दिन के आयोजनों की डी.वी.डी
6 डी.वी.डी. का सैट मात्र 100/- में
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें - मो. 9540040339
(डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा)

म्यांमा के गांव-गांव में बसी हैं आर्यसमाज की जड़ें। मजबूती के लिए आर्य वीर दल/युवा दल का गठन होगा - अशोक खेत्रपाल, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमा

का आर्य समाज समर्थन करता है।''

ओ३म् ध्वजारोहण सभा प्रधान जी द्वारा, दूसरा ध्वज स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा तथा म्यांमार देश का ध्वज म्यांमार सभा प्रधान श्री अशोक क्षेत्रपाल द्वारा किया गया। ध्वजा रोहण के पश्चात मुख्य मंच पर मुख्यमन्त्री तथा अन्य शासकीय उच्चाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलित किया

डॉ. सुखेदव चन्द सोनी परिवार ने अपने श्वसुर स्व. डॉ. ओम प्रकाश जी की स्मृति में $5000 की प्रचारक निधि स्थापित

गया। कार्यक्रम में आशा से कहीं अधिक उपस्थिति हो गई, पूरा पण्डाल भर गया खड़े रहने का स्थान भी नहीं बचा।

प्रतिदिन प्रात: 5 से 6 बजे तक स्वामी देवव्रतजी द्वारा योग आसन प्राणायाम प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें बड़ी संख्या में आर्यजनों की उपस्थिति होती थी।

रखाइन प्रान्त में घटित घटना पर शोक व्यक्त किया गया। प्रतिदिन प्रात: एवं सायं यज्ञ होता रहा, यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या नन्दिताजी शास्त्री थी। पाँच कुण्डीय यज्ञ में 40 से 50 यजमान और उनके आसपास सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालू बैठकर यज्ञ का आनन्द ले रहे थे।

इन दिनों में विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन 4 सत्रों में होता रहा, जिसमें वेद, आर्य समाज, महिला आर्य समाज के

न आने का दु:ख - सम्मेलन की सफलता की कामना : वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए करुंगा हर सम्भव सहयोग- *महाशय धर्मपाल*

सैद्धान्तिक व अन्धविश्वास निवारण विषयों पर विद्वानों ने चर्चा की। डॉ. सुखदेव चन्द सोनी परिवार ने अपने श्वसुर स्व. डॉ. ओम प्रकाश जी की स्मृति में 5000 डॉलर की दान राशि भेंट कर प्रचार निधि की स्थापना की। महाशय धर्मपाल जी ने भेजे अपने सन्देश में कहा-'सर्वप्रथम न आने का दु:ख, किन्तु सम्मेलन की सफलता की प्रभु से प्रार्थना करता हूं। मैं वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए हर सम्भव सहयोग का सदैव प्रयास करूंगा साथ ही म्यांमा में कन्या गुरुकुल आरम्भ करने क लिए अपना भरपूर सहयोग करने का आश्वासन देता हूं।' महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपौत्र श्री पूनम सूरी जी ने अपने शुभकामना सन्देश में सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलाता के लिए शुभकामनाएं दी।

100 साल पुराने आर्य समाज के गीतों को आर्य समाज म्यांमा ने बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से संजोकर रहा हुआ है जिसकी संगीतमयी प्रस्तुति म्यांमा के अनेक समूहों द्वारा की गई। प्रात: से रात्रि (भजन संध्या) तक लगभग 40 से 50 भजनों की प्रस्तुति मॉरिशस व म्यांमार देश की महिलाओं नवयुवकों व छोटे-छोटे बच्चों द्वारा दी गई।

विशेष आकर्षण था - 100 स्थानीय व्यक्तियों द्वारा एक साथ अपने-अपने हवन कुण्ड में सामूहिक यज्ञ किया गया।

संकल्प - आचार्या नन्दिता जी शास्त्री ने अनेक व्यक्तियों को नित्य यज्ञ करने की प्रेरणा दी, परिणाम स्वरूप अनेक व्यक्तियों ने दैनिक यज्ञ करने का संकल्प लिया।

गुरुकुल स्थापना - म्यांमार में गुरूकुल स्थापना का निर्णय लिया गया। इस हेतु आर्थिक सहयोग की घोषणा भी होने लगी। तभी स्वामी धर्मानन्दजी ने कहा शिक्षण व्यवस्था हेतु आचार्य, शास्त्री वे उपलब्ध करवा देगें।

भारत से पहुंचे कार्यकर्ताओं ने विशेष सहयोग दिया, जिनमें श्री धर्मवीर आर्य, एस. पी. सिंह, नरेश पाल आर्य, विजेन्द्र आर्य, सुभाष कोहली प्रमुख थे।

ईश्वर की महती कृपा से म्यांमार निवासियों के अथक परिश्रम ने सम्मेलन को यादगार बना दिया। जितनी संभावना थी उससे कई गुना ज्यादा उसका परिणाम संगठन हित में प्राप्त हुआ। अनेक आर्यजन तो कार्यक्रम के पश्चात चर्चा करते करते भावुक हो जाते और इस कार्यक्रम की

100 साल पुराने आर्यसमाज की गीतों को सम्भाल कर रखा है आर्यसमाज म्यांमा ने

सफलता के लिए सार्वदेशिक सभा का आभार मानते, निश्चित रूप से यह कार्यक्रम केवल संख्या की दृष्टि से नहीं सार्थकता की दृष्टि से सफल रहा।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्व. सभा

विशेष : सम्मेलन सम्बन्धी कुछ और समाचार एवं चित्र आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। - *सम्पादक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
केरल में स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत केरल में 6 दिवसीय स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर का जनवरी, 2018 में आयोजित किया जा रहा है। जो आर्यजन शिविर में सम्मिलित होना चाहते हैं वे अपना अभी से तैयारियां रखें। **कुल यात्रा व्यय रेल (राजधानी) 13-15 हजार** तथा **हवाई जहाज से 14 से 18 हजार रुपये** होगा। इसमें मन्नार एवं बैक वाटर सर्कस भ्रमण भी सम्मिलित है। स्वाध्याय शिविर में **महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र कालीकट** में आयोजित होगा तथा विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा स्वाध्याय एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। शिविर में **अधिकतम 40 महानुभाव** ही भाग ले सकेंगे। **पहले आओ-पहले पाओ** के आधार पर व्यवस्था की जा सकेगी। अधिक जानकारी के लिए श्री शिव कुमार मदान, यात्रा संयोजक (मो.नं. 9310474979) से सम्पर्क करें। - ***महामन्त्री***

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में
अधिकतम संख्या दिवस
1 अप्रैल, 2018

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस का आयोजन किया जा रहा है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - ***विनय आर्य, महामन्त्री***

निर्वाचन समाचार
आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली- 110034

प्रधान : श्री धर्मपाल परमार
मन्त्री : श्री एन. के. कस्तूरिया
कोषाध्यक्ष : श्री महेन्द्र पाल अरोड़ा

आर्यसमाज दयानन्द विहार, दिल्ली-110092

प्रधान : श्री सुभाष बत्रा
मन्त्री : श्री ईश नारंग
कोषाध्यक्ष : डॉ. आशा मेहता

आर्य समाज टैगोर गार्डन का 51वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज (ए.सी.ब्लॉक) टैगोर गार्डन नई दिल्ली 8 से 12 नवम्बर 2017 के बीच अपना 51वां वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत सारमवेद-यज्ञ, वेद कथा, मनाहर भजन, संगीत, आर्य महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन, ऋषि लंगर का आयोजन किया जाएगा। वेद प्रवचन आचार्य द प्रकाश श्रोत्रिय जी एवं भजन संगीत आचार्य देव आर्य जी प्रस्तुत करेंगे। मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान एवं श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे।

-***वीरेन्द्र कुमार शास्त्री, संयोजक***

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

जयपुर के गोविन्दपुर रामनगर सोडाला के निवासियों ने उत्साहपूर्वक 30 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ ब्रह्मा पं. भगवान सहाय विद्यावाचस्पति एवं वेदपाठीगण डॉ. संदीपन आर्य, दीपक शास्त्री रहे। भजन पं. याद राम, दीपक शास्त्री तथा श्रुति शास्त्री जी ने प्रस्तुत किये। समिति के प्रधान श्री रघुनन्दन बंसल ने सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों का आभार व्यक्ति किया। -***ईश्वर दयाल माथुर, पत्रकार***

आर्य वर चाहिए

गुड़गांव निवासी प्रतिष्ठित वैश्य परिवार की 25 वर्ष, 5'2'' सुंदर, साफ रंग, बी.कॉम. बी.एड., एनीमेशन कोर्स, कार्यरत आर्य कन्या हेतु गुण कर्म स्वभावानुसार सुयोग्य आर्य युवक चाहिए। जाति बन्धन नहीं, एन.सी.आर के आर्य परिवार को प्राथमिकता। सम्पर्क करें-***9811998847, 9873054398***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी के नए भवन का लोकार्पण : 10 दिसम्बर प्रात: 10 बजे से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी, किशनगंज, नई दिल्ली के नए निर्मित भवन का लोकार्पण समारोह रविवार 10 दिसम्बर, 2017 को प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक हर्षोलासपूर्वक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर यज्ञ एवं भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा।

इसी अवसर पर सभा द्वारा संचालित दो महत्वपूर्ण योजनाओं '**सहयोग**' एवं '**यज्ञ सुविधा केन्द्र**' का भी औपचारिक उद्घाटन एवं लोकार्पण भी किया जाएगा।

आर्यजनों से निवेदन है कि वे आयोजन की तिथि नोट कर लें और अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं। समारोह के उपरान्त सभी उपस्थित महानुभावों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है। - ***महामन्त्री***

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन - के.- 1046 का उद्घाटन समारोह रविवार 12 नवम्बर, 2017 को आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर यज्ञ, भजन एवं शोभा यात्रा का भी आयोजन किया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज जहांगीर पुरी लगभग 40 वर्षों से बिना भवन के ही क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार एवं आर्यसमाज की गतिविधियां संचालित रहा है। अत: आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। - ***रामभरोसे आर्य, मन्त्री***

भव्य वेद कथा

आर्यसमाज विवेक विहार में 23 से 29 अक्तूबर तक वेद कथा का भव्य आयोजन किया जा रहा है। प्रवचन आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार, आचार्य आशीष के होंगे। - ***पीयूष शर्मा, प्रधान***

42वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरिनगर का 42वां वार्षिकोत्सव 25 से29 अक्तूबर, 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। - ***महेन्द्र सिंह, मन्त्री***

32वां वार्षिकोत्सव समारोह

आर्यसमाज बैंक एंकलेव दिल्ली का 32वां वार्षिकोत्सव 1 से 5 नवम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। भजन श्री सहदेव सरस एवं प्रवचन श्री चन्द्रशेखर शर्मा के होंगे। - ***प्रधान***

खेद व्यक्त : खेद है कि साप्ताहिक आर्य सन्देश का गत अंक 16 से 22 अक्तूबर 2017 प्रैस में हुई तकनीकी खराबी के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - ***सम्पादक***

धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन

सभी धर्मप्रेमी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि आर्य समाज के कार्यों और देश-धर्म सम्बन्धित कार्यों में विशेष योगदान और सेवाएं प्रदान करने वाले आर्य नेताओं, आचार्यों, विद्वानों, प्रचारकों, पुरोहितों और आर्य वीर-वीरांगनाओं से सम्बन्धित विशेष घटनाएं जैसे विधवा -विवाह, छुआछूत, स्त्री-शिक्षा, वेद-प्रचार, पाखण्ड-खण्डन, जात-पात बंधन आदि से सम्बन्धित या कोई अन्य प्रेरक प्रसंग आदि की जानकारी जो आज तक प्रकाशित नहीं हुई हो और आपकी जानकारी में है तो आप कृपया **सम्पादक** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ई मेल कर दीजिए। हमारा प्रयास रहेगा कि आपके द्वारा प्रेषित सूचना/घटनाक्रम को प्रकाशित कराया/किया जाए। - ***सम्पादक***

शोक समाचार
श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा जी को पुत्र शोक

आर्यसमाज हनुमान रोड के पूर्व मन्त्री, उप प्रधान, वर्तमान में आन्तरिक लेखा निरीक्षक एवं आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार के प्रधान श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा जी के सुपुत्र श्री कार्तिकेय हुड्डा जी का 18 अक्तूबर, 2017 को 29 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। श्री कार्तिकेय जी आर्यसमाज हनुमान रोड के सदस्य एवं पूर्व आर्यवीर दल अधिष्ठाता थे। उनका अन्तिम संस्कार द्वारका सै. 18 शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 29 अक्तूबर को 11 से 1 बजे आर्यसमाज हनुमान रोड में होगी।

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज मानसरोवर पार्क, शाहदरा के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद शर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती पावर्ती देवी जी का दिनांक 14 अक्तूबर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 16 अक्तूबर को आयोजित की गई जिसमें सभा अधिकारियों सहित पूर्वी दिल्ली की अनेक आर्यसमाज एवं आर्य संस्थानों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 अक्तूबर, 2017 से रविवार 29 अक्तूबर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26–27 अक्तूबर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 अक्तूबर, 2017

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा (बर्मा): 6–7–8 अक्तूबर, 2017

प्रतिष्ठा में,

आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में विश्व शान्ति महायज्ञ
देश–विदेश से म्यांमा सम्मेलन में पहुंचे आर्यजनों ने प्रदान की आहुतियां।

कैलेण्डर वर्ष 2018

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 23360150, मो. 09540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001,
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह